शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग़ज़ल गायकी के मसीहा : उस्ताद मेहंदी हसन

दीपेश कुमार विश्नावत (शोधार्थी)
कोटा विश्वविद्यालय
कोटा, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

कला की साधना के लिए धैर्य, एकाग्रता, तपस्या, नियमित अभ्यास व गुरु भक्ति से ही कला मर्मज्ञ बना जा सकता है। भारत एक ऐसा देश है जहां कई वर्षो से कई जातियां आती-जाती रही हैं और इन विभिन्न जातियों का जब विलय होता है तो यह निश्चित है कि इस विलय की प्रक्रिया में एक-दूसरे की संस्कृति का आदान प्रदान भी होता है। ग़ज़ल गायकी को सभी गायक, गायिकाओं ने गाया है, किन्तु इस ग़ज़ल शैली को जो ऊंचाईयां मेहदी हसन सा. ने दी है, वैसी किसी अन्य गायक ने नहीं दी। प्रस्तुत शोध पत्र में ग़ज़ल के मुख्य बिन्दुओं को दर्शाया है और मेहदी हसन सा. के ग़ज़ल गायकी के क्षेत्र में दिए गए योगदान पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भारत वर्ष सदा से ही कला एवं कला को जीवंत रखने वाले कलाकारों से परिपूर्ण रहा है और रहेगा। भारतीय संगीत तो हमारी धरोहर है ही, परन्तु यह एक संगीतकार की धरोहर है, संगीत शास्त्र, स्वर विज्ञान एवं संगीत प्रदर्शन। कला से ही देश की संस्कृति को जीवित रखा जा सकता है। "जीवन में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है, सांस्कृति आदान प्रदान से ही एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से प्रगाढ़ मैत्री स्थापित करना है।"

संगीत के क्षेत्र में ग़ज़ल की दुनिया अपने आप में एक अलग मुकाम रखती है। अरबी साहित्य से शुरू हुई यह काव्य विधा समय के साथ फारसी, उर्दू और हिन्दी साहित्य में भी काफी लोकप्रिय हुई। यूं तो आमतौर पर ग़ज़ल में जुदाई और कुछ खोने का दर्द होता है, लेकिन बावजूद इसके इसमें प्यार की रूमानियत होती है। एक ऐसी काव्यात्मक अभिव्यक्ति जो किसी न किसी मोड़ पर हमारे दिल को छू जाती है और हमें सुकून देती है।

भारतीय संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखने पर पता चलता है कि यह अत्यन्त प्राचीन है। यह तो सभी जानते हैं कि भारतीय संगीत की वर्तमान छवि हिन्दू मुस्लिम संस्कृतियों का सुन्दर मेल है। भारतीय संगीत की सभी विधाओं अर्थात् गायन, वादन, नृत्य में हिन्दू संस्कृति तथा मुस्लिम संस्कृतियों का सम्मिश्रण साफ-साफ दृष्टिगत होता है। चूंकि भारत के साथ अरब के व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध बहुत ही प्राचीन समय हैं और यही वजह है कि भारत के संगीत में अरब के संगीत का और अरब के संगीत में भारत के संगीत का अतिसुन्दर समन्वय हुआ है।

भारतीय काव्य जगत तथा संगीत जगत को जिसने सबसे ज्यादा प्रभावित किया है वह रचना 'ग़ज़ल' है। ग़ज़ल शब्द की उत्पत्ति 'गज़ाल' शब्द से हुई है। जिसका अर्थ 'हरिण' और अपने महबूब की खूबसूरती का वर्णन करना है।

ग़ज़ल मूल रूप से फारसी भाषा की विधा है। उर्दू, फारसी और हिन्दवी की पुत्री है। उर्दू का अपना

एक काव्य शास्त्र है जो कुछ मुश्किल है। हिन्दी ग़ज़ल शिल्प विधान की दृष्टि से थोड़ी कमजोर होने के कारण अभी संघर्ष के दौर से गुज़र रही है फिर भी हिन्दी में ग़ज़ल कहने की परम्परा बढ़ रही है और काफी जानकार आगे आ रहे हैं। ग़ज़ल में ज़रूरी नहीं है कि वह हुस्न और इश्क पर ही आधारित हो, उसमें ईश्वर के प्रति प्रेम, आस्था और अपने आस पास के वातावरण एवं देश प्रेम, विश्व प्रेम आदि का वर्णन होता है।

उस्ताद मेहंदी हसन साहब : व्यक्तित्व

ग़ज़ल गायकी के क्षेत्र में ऐसी ही एक महान शख़्सियत हैं, जिन्हें ग़ज़ल गायकी के 'शहँशाह-ए-ग़ज़ल' कहा जाता है उस्ताद मेहदी हसन साहब। आपने जो ग़ज़ल की खिदमत की, वैसी खिदमत कोई नहीं कर सका है। आपका जन्म भारत के सबसे सुरीले राज्य राजस्थान के झुन्झुनू जिले से महज 17 किमी दूर लूणां गांव में 18 जुलाई सन् 1927 को हुआ। आपका गौत्र बाबर है और कहा जाता है कि इस बाबर गौत्र के कलाकारों का आज तक कोई सानी नहीं है। ग़ज़ल व मेहंदी हसन सा. यह दोनों एक दूसरे के पर्याय है। इस बारे में यह कथन दृष्टव्य है -

- फूल अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहंदी हसन खां सा.' उस फूल की 'महक'
- 'सूरज' अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहंदी हसन खां सा.' उस सूरज की 'किरण'
- चाँद अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहंदी हसन खां सा.' चाँद की 'चाँदनी'
- पक्षी अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहंदी हसन खां सा.' पक्षी की 'उड़ान'
- आकाश अगर 'ग़ज़ल' है तो 'मेहंदी हसन खां सा.' 'पृथ्वी'

खां साहब की आवाज़ में एक गहरापन और गम्भीरता है जो ग़ज़ल गायन के लिए बड़ी ही उपयुक्त होती है। इनकी आवाज़ सुनते ही उनका रियाज़ उनकी गायकी में स्पष्ट झलकता है। आप बहुत ही सुरीला गाते हैं। स्वर लगाने का आपका अंदाज़ इस तरह का है कि श्रोता स्वरों के समन्दर की गहनतम गहराई में पहुंच जाते हैं। इनके स्वर लगाते ही श्रोताओं में असर होने लगता है। शब्द इनकी गायकी का सहारा पाकर अपने में छुपे भावों को खुद-ब-खुद प्रकट करने लगते हैं। खां साहब शब्दों को भावों का जामा पहनाने में खूब माहिर थे। वे शब्दों के उच्चारण को स्पष्ट रखते हुए शब्दों में स्वरों के माध्यम से ऐसा भाव भरते हैं कि शब्द का अर्थ तथा शब्द में निहित भाव स्पष्ट नज़र आने लगता है। एक ही शब्द को कई-कई स्वर संयोजनों के साथ गाने में उन्हें कमाल हासिल था।

इस तमाम जानकारी से नये ग़ज़ल गायकों को नये आयाम मिलेंगे। वह सब मेहंदी हसन सा. के पद चिह्नों पर चलेंगे। इस शोध से सभी ग़ज़ल गायक व गायिकाओं को मार्गदर्शन मिलेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. रविवारीय पत्रिका-23 जून 2012, स्वप्नल-सोनल
2. मुसलमान और भारतीय संगीत, आचार्य बृहस्पति 1982, पृष्ठ 24
3. बेग़म अख़्तर : व्यक्तित्व और कृतित्व, डॉ.रोशन भारती, (शोध प्रबंध) 1992
4. हिन्दोस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी, डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दी ग्रन्थागार, सोजती गेट के बाहर, जोधपुर
5. मेरे मेहंदी हसन, अखिलेश झा